https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

नई दिल्ली | के.वि.सं. (मु.)

संस्करण: सितंबर 2026
वर्ष-2, अंक- 3
4 पृष्ठ

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

** यह 'केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल' के अंग्रेज़ी संस्करण का हिंदी अनुवाद है।*

संपादकीय

शिक्षक: जो पढ़ाते नहीं, जीवन गढ़ते हैं

भारत में शिक्षक की अवधारणा कभी भी केवल कक्षा तक सीमित नहीं रही है। प्राचीन गुरू-शिष्य परंपरा से लेकर आधुनिक विद्यालय तक, शिक्षक को मार्गदर्शक, गुरू और ज्ञान के स्रोत के रूप में माना गया है। शिक्षक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित है, जो केवल ज्ञान ही प्रदान नहीं करता, बल्कि चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गुरू-शिष्य परंपरा भारत की उस शाश्वत मान्यता को दर्शाती है कि शिक्षा केवल जानकारी एकत्र करना नहीं है; यह समझ, अनुशासन और आत्मखोज की दिशा की एक यात्रा भी है। गुरू अपने शिष्य को जानता था, उसकी क्षमताओं को समझता था और उसकी योग्यता के अनुसार उसका मार्गदर्शन करता था। यह संबंध विश्वास, सम्मान और सीखने के साझा संकल्प पर आधारित था। इसलिए, शिक्षक होना एक विशेषाधिकार के साथ-साथ एक जिम्मेदारी भी है।

वहीं आज शिक्षक परंपरा और परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज की कक्षा में स्मार्ट बोर्ड, डिजिटल संसाधन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हो सकती है, लेकिन यह शिक्षक और विद्यार्थी के बीच मानवीय जुड़ाव का विकल्प नहीं है। तकनीक जानकारी दे सकती है पर शिक्षक उसे अर्थ प्रदान करता है। तकनीक किसी प्रश्न का उत्तर दे सकती है पर शिक्षक बच्चे को सही प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है।

हर बच्चा अपनी अलग कहानी, क्षमता और सपने के साथ कक्षा में प्रवेश करता है। शिक्षक की भूमिका उस विशिष्टता को पहचानना और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराना है। कभी-कभी पढ़ाने का अर्थ किसी कठिन अवधारणा को समझाना होता है तो कभी इसका अर्थ धैर्यपूर्वक सुनना, झिझकने वाले बच्चे का उत्साह बढ़ाना, विद्यार्थी को हतोत्साहित किए बिना उसकी गलती सुधारना या केवल यह कहना होता है कि-"मुझे तुम पर विश्वास है।"

शिक्षक का वास्तविक योगदान हमेशा तुरंत दिखाई नहीं देता, बल्कि यह वर्षों बाद दिखाई देता है। किसी विद्यार्थी के आत्मविश्वास में, किसी प्रोफेशनल ईमानदारी में, किसी नागरिक की करुणा में या उस व्यक्ति के साहस में, जो समाज में बदलाव लाने का निर्णय करता है।

यही कारण है कि भारतीय विचारधारा में शिक्षक का स्थान इतना विशेष है। शाश्वत वचन "आचार्य देवो भव:" हमें शिक्षक के प्रति उस पारंपरिक सम्मान की याद दिलाते हैं, इसलिए नहीं कि शिक्षक पूर्ण होते हैं, बल्कि इसलिए कि जीवन को आकार देने की उनके ऊपर एक गहरी जिम्मेदारी होती है।

शिक्षक दिवस 2026 पर हम उन सभी शिक्षकों का सम्मान करते हैं, जो इस विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। हमारी परंपराओं के मूल्यों को बनाए रखते हुए, वे युवा भारतीयों को बदलती दुनिया के लिए तैयार कर रहे हैं।

शिक्षक होना केवल किसी विषय को पढ़ाना भर नहीं है। यह एक मन को विकसित करने, एक चरित्र को आकार देने और एक जीवन को प्रेरित करने की साधना है।

और कभी-कभी, शिक्षक द्वारा दिया गया सबसे बड़ा पाठ वह नहीं होता जो ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाता है, बल्कि वह होता है जो शिक्षक अपने जीवन में चुपचाप जीकर दिखाता है।

~ **विकास गुप्ता,** आईएएस
■ ***आयुक्त, के.वि.सं.***

होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड: बच्चों को समझने का नया पैमाना

चंदना मंडल
■ *अपर आयुक्त (शैक्षणिक)*

क्या हो, यदि किसी बच्चे की प्रगति को केवल अंकों से कहीं अधिक के आधार पर समझा जा सके? क्या हो, यदि रिपोर्ट कार्ड हमें केवल यह न बताए कि बच्चे ने परीक्षा में कितना अच्छा प्रदर्शन किया, बल्कि यह भी बताए कि बच्चा कैसे सोचता है, कैसे सीखता है, दूसरों के साथ कैसे सहयोग करता है, कैसे सृजन करता है और कैसे आगे बढ़ता है?

यही विचार होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड (HPC) के पीछे है, जिसकी परिकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में की गई है। पारंपरिक अंक-पत्र से आगे बढ़ते हुए, HPC विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक क्षेत्रों में विकास की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करता है। शिक्षक के अवलोकन, स्व-मूल्यांकन, सहपाठी की प्रतिक्रिया, अभिभावकों के दृष्टिकोण और पोर्टफोलियो जैसे सीखने के प्रमाण इस तस्वीर को पूरा करने में योगदान देते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए HPC मूल्यांकन को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करता है। केवल यह पूछने के बजाय कि "बच्चे ने कितने अंक प्राप्त किए ?, यह हमें यह पूछने के लिए प्रेरित करता है कि "बच्चे ने क्या सीखा, उसमें कितना विकास हुआ और आगे उसे किस सहयोग की आवश्यकता है ?

योग्यता-आधारित शिक्षा में यह बदलाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सीखना केवल जानकारी को याद रखने तक सीमित नहीं है; यह ज्ञान को व्यवहार में लाने, समस्याओं का समाधान करने, आलोचनात्मक ढंग से सोचने, प्रभावी ढंग से संवाद करने तथा उचित मूल्यों और दृष्टिकोणों को विकसित करने के बारे में भी है। विकासात्मक लक्ष्यों और योग्यता संकेतकों को दर्ज करके HPC शिक्षकों को प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानने और उन क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता करता है, जहाँ सहयोग की आवश्यकता है।

HPC विद्यार्थियों को मूल्यांकन में अधिक सक्रिय भूमिका भी प्रदान करता है। आत्म-चिंतन और स्व-मूल्यांकन बच्चों को अपनी सीखने की प्रक्रिया के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि सहपाठी मूल्यांकन और अभिभावकों की सहभागिता अतिरिक्त दृष्टिकोण सामने लाती है। इस प्रकार, मूल्यांकन केवल सत्र या परीक्षा के अंत में होने वाली प्रक्रिया न रहकर एक साझा प्रक्रिया बन जाता है।

के.वि.सं. ने HPC के प्रबंधन और कार्यान्वयन के लिए अपने इन-हाउस डिजिटल प्लेटफॉर्म SAMAGAM को विकसित किया है। यह विद्यार्थियों की प्रगति को दर्ज करने और व्यवस्थित करने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है। इससे केन्द्रीय विद्यालयों में प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित और एकरूप बनती है तथा रिकॉर्ड को मैनुअल रूप से बनाए रखने का बोझ भी कम होता है।

इस महत्वपूर्ण बदलाव से केवल ग्रेड देने के बजाय, शिक्षक विशिष्ट, गुणात्मक और विकासोन्मुखी प्रतिक्रिया दे सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को समझने और अपने अगले कदमों की पहचान करने में सहायता मिलती है।

अंततः, HPC केवल एक नया रिपोर्ट कार्ड नहीं है। यह बच्चों को देखने और सीखने को समझने के हमारे दृष्टिकोण में बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। SAMAGAM के सहयोग से, यह के.वि.सं. को ऐसी मूल्यांकन संस्कृति विकसित करने में मदद कर सकता है, जो समग्र, योग्यता-आधारित, सहभागी हो और प्रत्येक विद्यार्थी के निरंतर विकास पर केंद्रित हो।

खेल से शक्ति, योग से संतुलन: शिक्षा के साथ स्वास्थ्य और व्यक्तित्व निर्माण की ओर के.वि.सं. की पहल

ए.पी.एस बराड़
■ *सहायक आयुक्त, के.वि.सं. (मु.)*

के.वि.सं. में शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं तक सीमित नहीं है। यहां खेल, योग, शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा तथा आत्मरक्षा भी शिक्षण के महत्वपूर्ण अंग हैं, जो विद्यार्थियों को स्वस्थ, आत्मविश्वासी और सर्वांगीण व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने में सहायता प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, के.वि.सं. शारीरिक गतिविधि, फिटनेस और स्वास्थ्य को शिक्षण के समान महत्व देता है। खेल एकीकरण के माध्यम से पारंपरिक और देशज खेलों को भी शैक्षिक अनुभव का हिस्सा बनाया जाता है, जिससे शारीरिक फिटनेस, सांस्कृतिक जागरूकता और सहभागिता की भावना को बढ़ावा मिलता है।

खेल और योग के लिए निर्धारित समय

सभी केन्द्रीय विद्यालयों में खेल और योग के लिए निर्धारित कक्षाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। कक्षा XI और XII के विद्यार्थियों के लिए शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा एक अतिरिक्त विषय के रूप में शामिल है। प्रत्येक केन्द्रीय विद्यालय में एक खेल शिक्षक होता है, जबकि योग विशेषज्ञों की सेवाएँ अनुबंध के आधार पर ली जाती हैं।

खेल प्रतियोगिताएँ और बुनियादी ढाँचा

के.वि.सं. विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियों के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। बाहरी खेल सुविधाओं में फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल, खो-खो, कबड्डी और हॉकी शामिल हैं, जबकि जहाँ सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वहाँ बैडमिंटन, टेबल टेनिस, ताइक्वांडो, बॉक्सिंग, शूटिंग और योग जैसी इनडोर गतिविधियों की भी व्यवस्था है। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और एस.जी.एफ.आई. स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में के.वि.सं. का प्रतिनिधित्व करने के लिए चयनित विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म और उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं।

खेल प्रशिक्षण

विद्यालय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण एवं कोचिंग शिविर आयोजित किए जाते हैं। विशेषज्ञ और प्रशिक्षक विद्यार्थियों को तकनीकी कौशल, खेल रणनीतियों, शारीरिक फिटनेस, मानसिक मजबूती और प्रतियोगिताओं की तैयारी के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

खेलों का उत्सव

केन्द्रीय विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन किया जाता है। वार्षिक खेल दिवस और प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए मिनी स्पोर्ट्स डे, सहभागिता, टीम भावना और खेल भावना को प्रोत्साहित करते हैं।

खेल प्रतियोगिताओं की बहु-स्तरीय व्यवस्था

खेल प्रतियोगिताओं की शुरुआत अंतर-सदनीय और विद्यालय स्तर से होती है तथा यह क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर तक आगे बढ़ती है। प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को एस.जी.एफ.आई. द्वारा आयोजित नेशनल स्कूल गेम्स में के.वि.सं. का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिलता हैं।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता

विद्यार्थियों को खेल महासंघों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल एवं योग गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। वे खेलो इंडिया स्कूल गेम्स और खेलो इंडिया यूथ गेम्स में भी सहभागिता करते हैं।

निगरानी व्यवस्था

खेल विभाग, क्षेत्रीय खेल प्रकोष्ठों और मुख्यालय स्थित राष्ट्रीय खेल प्रकोष्ठ के माध्यम से एक व्यवस्थित खेल प्रशासन प्रणाली संचालित होती है। ये व्यवस्थाएँ खेल कैलेंडर, प्रतियोगिताओं, खिलाड़ियों के चयन, प्रशिक्षण और सहभागिता की निगरानी करती हैं।

पुरस्कार और प्रोत्साहन

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार और प्रोत्साहन के माध्यम से सम्मानित किया जाता है। के.वि.सं. राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं और एसजीएफआई स्तर की प्रतियोगिताओं में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतने वाले विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिससे उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उनका उत्साह बढ़ता है।

के.वि.सं. का उद्देश्य केवल खिलाड़ी तैयार करना नहीं है, बल्कि ऐसे स्वस्थ, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार युवा नागरिकों का विकास करना है, जो शारीरिक मजबूती, मानसिक स्पष्टता, दृढ़ता और उन मूल्यों से सुसज्जित हों, जो राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए आवश्यक हैं।

80वें स्वतंत्रता दिवस पर देशभक्ति के रंग में रंगा के.वि.सं. मुख्यालय

नई दिल्ली: केन्द्रीय विद्यालय संगठन के मुख्यालय में 80वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह देशभक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर के.वि.सं. के आयुक्त श्री विकास गुप्ता ने वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया।

समारोह को और अधिक भावपूर्ण बनाते हुए पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, जेएनयू के विद्यार्थियों ने मधुर स्वर में 'वंदे मातरम्' प्रस्तुत किया। इसके पश्चात राष्ट्रगान हुआ और सभी गणमान्य अधिकारियों ने तिरंगे को नमन कर राष्ट्र के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं सम्मान व्यक्त किया। देशप्रेम से सराबोर के.वि.सं. (मु.) में विद्यार्थियों की प्रस्तुति ने समारोह में गौरव और उल्लास का वातावरण बना दिया।

विशेष आयोजन

खेल प्रतिभाओं को मिला प्रोत्साहन:विदेश मंत्री ने किया विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन

नई दिल्ली: माननीय विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर ने राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य पर पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एंड्रयूज गंज का दौरा कर 60 उभरते हुए स्क्वैश खिलाड़ियों से संवाद किया। उन्होंने युवा खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि दृढ़ संकल्प, अनुशासन और निरंतर अभ्यास के बल पर वे अपनी खेल आकांक्षाओं को साकार कर सकते हैं। इस अवसर पर श्री जयशंकर ने विद्यार्थियों के समर्पण, अनुशासन और खेल भावना की सराहना की। उन्होंने कहा कि वर्ष 2028 में स्क्वैश के ओलंपिक पदार्पण के साथ इस खेल की वैश्विक पहचान तथा महत्व और अधिक बढ़ेगा। उन्होंने भारती एंटरप्राइजेज लिमिटेड के सहयोग से संचालित स्क्वैश प्रतिभा विकास परियोजना के प्रति संतोष व्यक्त किया। यह पहल उभरती हुई युवा खेल प्रतिभाओं को पहचानने, निखारने और उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

श्रेष्ठ कार्यप्रणालियाँ

स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग
10 केन्द्रीय विद्यालयों ने रचा कीर्तिमान

एल.बी शर्मा
सहायक आयुक्त (सतर्कता) के.वि.सं. (मु.)

दस केन्द्रीय विद्यालयों ने स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग 2025–26 के अंतर्गत प्रतिष्ठित फाइव-स्टार रेटिंग प्राप्त कर केन्द्रीय विद्यालय संगठन का गौरव बढ़ाया। देशभर में फाइव-स्टार रेटिंग से सम्मानित 191 विद्यालयों में 10 केन्द्रीय विद्यालय शामिल हैं।

यह उपलब्धि स्वच्छता, सतत विकास, स्वस्थ आदतों और विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय विद्यालयों द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों को दर्शाती है। SHVR 2025–26 में कुल 1,275 केन्द्रीय विद्यालयों ने भाग लिया, जो स्वच्छता और पर्यावरणीय स्थिरता के उद्देश्यों के प्रति संगठन की मजबूत संस्थागत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा 29 जुलाई 2025 को शुरू की गई SHVR, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिकल्पना के अनुरूप है और इसका उद्देश्य स्वच्छ, हरित, स्वस्थ, समावेशी और सतत विद्यालयी वातावरण को बढ़ावा देना है। इस रेटिंग प्रणाली के अंतर्गत 60 संकेतकों के आधार पर विद्यालयों का मूल्यांकन किया जाता है। इनमें स्वच्छ जल, शौचालय, साबुन से हाथ धोना, संचालन एवं रखरखाव, व्यवहार परिवर्तन एवं क्षमता निर्माण तथा मिशन LiFE से जुड़ी गतिविधियाँ शामिल हैं।

फाइव-स्टार रेटिंग विद्यालयों में स्वच्छता, जिम्मेदार व्यवहार और सतत विकास का दैनिक जीवन में हिस्सा बनना। विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों के सामूहिक प्रयासों का प्रमाण है। सम्मानित किए गए 10 केन्द्रीय विद्यालयों को प्रशस्ति प्रमाण-पत्र, ₹1,00,000 का नकद पुरस्कार और अन्य सम्मान प्रदान किए जाएंगे।

यह उपलब्धि अन्य केन्द्रीय विद्यालयों के लिए एक प्रेरणादायक मानक प्रस्तुत करती है और स्वच्छ, हरित, स्वस्थ तथा अधिक सतत परिसर विकसित करने के लिए के.वि.सं. की प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है। यह सम्मान संगठन के सभी विद्यालयों को स्वच्छता, सतत विकास और उत्कृष्टता की दिशा में अपने प्रयासों को और मजबूत करने के लिए प्रेरित करेगा।

सोचो, पूछो, तर्क करो
विद्यार्थियों की तर्कशक्ति को मिल रही नई उड़ान

एस.वी जोगलेकर
उपायुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय रांची

क्या हो, यदि अरेंजमेंट पीरियड केवल "खाली समय" न रहकर विद्यार्थियों की सोच को नई दिशा देने का अवसर बन जाए? क्या हो, यदि कुछ मिनटों का उद्देश्यपूर्ण चिंतन उन्हें बेहतर प्रश्न पूछने, समस्याओं का समाधान करने और विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाए?

इसी सोच को साकार करने के लिए के.वि.सं. के रांची संभाग में कक्षा IX के 3,320 विद्यार्थियों के लिए "विद्यार्थियों में तर्क कौशल का विकास" पहल शुरू की गई है। यह पहल अरेंजमेंट पीरियड को सोचने, प्रश्न करने, विश्लेषण करने और तर्क करने के सार्थक अवसर में बदलती है—वह भी बिना किसी अतिरिक्त विषय या शैक्षणिक दबाव के।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की योग्यता-आधारित शिक्षा की भावना से प्रेरित यह पहल विद्यार्थियों को केवल तथ्यों को याद करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें समझने, लागू करने, विश्लेषण करने, मूल्यांकन करने और नए विचारों का सृजन करने के लिए भी प्रेरित करती है।

आयु-उपयुक्त प्रश्नों, पहेलियों, परिस्थितियों, पैटर्न, केस स्टडी और वास्तविक जीवन की समस्याओं के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के तर्क का अभ्यास करते हैं। वे केवल "क्या?" का उत्तर नहीं खोजते, बल्कि "कैसे?", "क्यों?" और "आप ऐसा क्यों सोचते हैं?" जैसे प्रश्नों पर भी विचार करते हैं।

इस पहल का प्रभावी कार्यचक्र है:

आकलन → अभ्यास → अवलोकन → चिंतन → सुधार → पुनः आकलन

प्रारंभिक आकलन विद्यार्थियों की मौजूदा तर्क क्षमता को समझने में मदद करता है। इसके बाद नियमित गतिविधियों के माध्यम से तार्किक सोच, व्याख्या, निष्कर्ष निकालने, विश्लेषण, मूल्यांकन, प्रमाण-आधारित निर्णय और समस्या-समाधान जैसे कौशलों को मजबूत किया जाता है।

इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक केवल पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि चिंतन के मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। वे विद्यार्थियों को अपने विचार स्पष्ट करने, वैकल्पिक दृष्टिकोणों पर विचार करने, धारणाओं पर प्रश्न उठाने, गलतियों से सीखने और तर्क व प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं।

पुस्तकालय की सामग्री, संदर्भ पुस्तकों और तर्क-विचार से जुड़े उपलब्ध संसाधनों को रचनात्मक ढंग से अनुकूलित कर कक्षा IX के लिए अभ्यास सेट, कार्यपत्रक और योग्यता-आधारित गतिविधियाँ तैयार की गई हैं।

यह पहल दर्शाती है के सीखने के लिए हर अवसर महत्वपूर्ण है—यहाँ तक कि अरेंजमेंट पीरियड के कुछ मिनट भी। सही दिशा और उद्देश्य के साथ यह छोटे-छोटे प्रयास विद्यार्थियों को जिज्ञासु, तार्किक, आत्मविश्वासी और बेहतर निर्णय लेने वाला बना सकते हैं।

इस पहल की व्यापक दृष्टि सरल, लेकिन प्रभावशाली है: तर्क करना केवल कभी-कभार किया जाने वाला अभ्यास नहीं, बल्कि सोचने की एक स्वाभाविक आदत बनना चाहिए।

- एक पीरियड सीखने का अवसर बन सकता है।
- एक प्रश्न जिज्ञासा का माध्यम बन सकता है।
- एक उत्तर तर्क करने की प्रक्रिया बन सकता है और कक्षा चिंतन का मंच बन सकती है।

शिक्षक मंच
#KViansRock

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026
के.वि.सं. की दो मुख्य अध्यापिकाओं को राष्ट्रपति करेंगी सम्मानित

सुश्री अमुथा जे.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की दो मुख्य अध्यापिकाओं का चयन राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026 के लिए किया गया है। उन्हें शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितंबर 2026 को माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा सम्मानित किया जाएगा। पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, मदुरै की मुख्य अध्यापिका सुश्री अमुथा जे. और पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, रंगिया की मुख्य अध्यापिका डॉ. मनीषा खेत्रपाल प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान के लिए चयनित शिक्षकों में शामिल हैं।

यह पुरस्कार उनके समर्पित सेवाकाल, शैक्षिक नेतृत्व और विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों को समृद्ध बनाने में उनके योगदान का सम्मान है। उनका चयन के.वि.सं. के लिए गौरव का विषय है और यह युवा मस्तिष्कों को आकार देने में समर्पित शिक्षकों के प्रभाव को रेखांकित करता है। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विद्यालयी शिक्षा में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों तथा नवाचारपूर्ण कार्यप्रणालियों, समर्पण और अनुकरणीय व्यावसायिक प्रतिबद्धता के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरित करने में उनकी भूमिका को मान्यता प्रदान करता है।

डॉ. मनीषा खेत्रपाल

जापान में सीखेंगे, भारत में सिखाएँगे
के.वि.सं. के दो शिक्षक MEXT कार्यक्रम के लिए चयनित

सुश्री प्रगति सिंह

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के दो प्रतिभाशाली शिक्षकों का चयन जापान सरकार के प्रतिष्ठित MEXT छात्रवृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण विद्यार्थी पाठ्यक्रम 2026 के लिए किया गया है। पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय गणेशखिंड की प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका सुश्री प्रगति सिंह और पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, बेलगावी कैंट के स्नातकोत्तर शिक्षक श्री जोशिन जे.ए. जापान में 18 माह के विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेंगे।

इस कार्यक्रम का आयोजन ओसाका क्योइकु विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। इसके माध्यम से दोनों शिक्षक अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक अनुभव प्राप्त करेंगे और जापानी शिक्षा-पद्धति तथा शिक्षक विकास की प्रभावी कार्यप्रणालियों से परिचित होंगे। कार्यक्रम के अंतर्गत ओसाका जापानी भाषा शिक्षा केंद्र, JASSO में जापानी भाषा का प्रारंभिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। यह अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण अनुभव दोनों शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को नई दिशा देगा। साथ ही, उन्हें विभिन्न संस्कृतियों को समझने, वैश्विक शैक्षिक दृष्टिकोण अपनाने और शिक्षा-पद्धतियों के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण अवसर भी प्रदान करेगा।

श्री जोशिन जे.ए.

रिडल चैलेंज

के.वि.सं. मुंबई संभाग में पहेलियों से सजा सोच और तर्क का मंच

भारत भूषण
प्राचार्य, पीएम श्री के.वि. क्र. 2 एएफएस, पुणे

रिडल चैलेंज, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई की एक अभिनव शैक्षणिक पहल है, जिसकी शुरुआत एक सरल लेकिन प्रभावशाली सवाल से होती है: क्या एक पहेली गहरी सोच का द्वार बन सकती है? इसका उत्तर हर बार तब सामने आता है, जब कोई विद्यार्थी रुककर निरीक्षण करता है, सवाल करता है और अपने सामने रखी सरल-सी दिखाई देने वाली समस्या को हल करने का प्रयास करता है।

यह पहल इस बात को पहचानती है कि सार्थक शिक्षा केवल अंकों और शैक्षणिक प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसा रोचक मंच तैयार करती है, जहाँ जिज्ञासा, अवधारणात्मक स्पष्टता, विश्लेषणात्मक क्षमता और आत्मविश्वास समाधान खोजने के आनंद के साथ विकसित होते हैं।

एक पहेली से शुरू हुई प्रेरक यात्रा

इस प्रेरक यात्रा का शुभारंभ 1 नवंबर 2025 को प्रथम रिडल चैलेंज के साथ हुआ। क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के सभी केन्द्रीय विद्यालयों में कक्षा VI से XII तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इस पहल ने सोचने को एक रोचक अनुभव में बदल दिया। 18 अगस्त 2026 को आयोजित इसका चौथा संस्करण विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच इसकी बढ़ती लोकप्रियता तथा निरंतर विस्तार का प्रमाण है।

उत्तर नहीं, सोचने का संकेत

पहेली अपना उत्तर कभी सीधे नहीं बताती; वह विद्यार्थियों को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करती है। सुविचारित चुनौतियों के माध्यम से विद्यार्थी पैटर्न पहचानते हैं, प्रतीकों और संख्याओं का अर्थ समझते हैं, विचारों को जोड़ते हैं, संबंधों को खोजते हैं, धारणाओं पर प्रश्न उठाते हैं और अनेक संभावनाओं का अन्वेषण करते हैं।

वे समझते हैं कि पहला उत्तर हमेशा सही नहीं होता और किसी समस्या को अलग नजरिए से देखने पर समाधान का एक नया मार्ग खुल सकता है।

मनोरंजन से हटकर

रिडल चैलेंज केवल पारंपरिक अध्ययन से अलग मनोरंजन का अवसर नहीं, बल्कि सीखने की एक प्रभावी प्रक्रिया है। यह तार्किक चिंतन, रचनात्मक एवं पार्श्व चिंतन, सूक्ष्म निरीक्षण, धैर्य और समस्या-समाधान कौशल को मजबूत करता है।

हर पहेली विद्यार्थियों को सोचने, परखने और आगे बढ़ने का अवसर देती है। वे किसी विचार को आजमाते हैं, अड़चन आने पर अपनी रणनीति बदलते हैं और फिर नए उत्साह के साथ प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में गलत उत्तर भी सीखने की सीढ़ी बन जाता है, जो आत्मचिंतन, दृढ़ता और पुनः प्रयास का आत्मविश्वास प्रदान करता है।

> ~ हर सुलझाई की गई पहेली एक उज्ज्वल, समझदार और बेहतर कल की ओर बढ़ता एक कदम है।
>
> ~ कभी-कभी असली चुनौती पहेली को हल करना नहीं होता, बल्कि यह जानना भी होता है कि वह पहेली हमारे मन को क्या सिखाती है और हमे कैसे सोचने के लिए प्रेरित करती है।

विषयों की सीमाएँ मिटाती सोच

रिडल चैलेंज की विशिष्टता इसकी बहुविषयक प्रकृति में निहित है। गणित, विज्ञान, भाषा, तर्क, निरीक्षण और कल्पना—सभी एक साथ मिलकर सीखने को समृद्ध बनाते हैं। विद्यार्थी विभिन्न विषयों के ज्ञान को जोड़ते हैं, अप्रत्याशित संबंधों को पहचानते हैं और अपनी समझ को नई परिस्थितियों में लागू करते हैं।

यह अनुभव के.वि.सं. की व्यापक शैक्षिक दृष्टि को साकार करता है, जहाँ शिक्षा पाठ्यपुस्तकों की सीमाओं से आगे बढ़कर विद्यार्थियों को सोचने, खोजने, जोड़ने और सृजन करने के लिए प्रेरित करती है।

जिज्ञासा से खोज तक

रिडल चैलेंज की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह विद्यार्थियों का ध्यान केवल उत्तर पर नहीं, बल्कि उत्तर तक पहुँचने की पूरी प्रक्रिया पर केंद्रित करता है। उलझन का क्षण जिज्ञासा जगाता है, कठिन संकेत प्रयास की प्रेरणा देता है और समाधान मिलना खोज की आनंदमयी अनुभूति बन जाता है। यहीं से वास्तविक और स्थायी सीखने की शुरुआत होती है।

हर पहेली, एक नई संभावना

रिडल चैलेंज हमें याद दिलाता है कि प्रश्न का महत्व कई बार उत्तर से भी अधिक होता है। यह युवा मस्तिष्कों को स्पष्ट दिखाई देने वाली बातों से आगे देखने, स्थापित धारणाओं को चुनौती देने और अपरिचित समस्याओं का सामना जिज्ञासा, रचनात्मकता और आत्मविश्वास के साथ करने के लिए प्रेरित करता है।

रिडल चैलेंज का प्रभाव

- आलोचनात्मक चिंतन का विकास करता है।
- अवधारणात्मक समझ को मजबूत बनाता है।
- रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देता है।
- तार्किक तर्क क्षमता विकसित करता है।
- सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है।
- आत्मविश्वास और सीखने की प्रेरणा बढ़ाता है।
- भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।
- सीखने के आनंद को बढ़ावा देता है।

संस्कृत प्रवाह

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत्।
पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्दत्वा सोऽनृणी भवेत्।।

भावार्थ

"यदि गुरु शिष्य को एक अक्षर का भी ज्ञान प्रदान करें, तो पृथ्वी पर ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसे अर्पित करके शिष्य गुरु के ऋण से मुक्त हो सके।"

रक्षाबंधन पर राष्ट्रपति से भेंट बनी विद्यार्थियों के लिए यादगार पल

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय विद्यालय और पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-25, रोहिणी के विद्यार्थियों को रक्षाबंधन के पावन अवसर पर भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से मिलने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ। इस भेंट ने विद्यार्थियों को माननीय राष्ट्रपति के साथ संवाद करने और इस पावन पर्व की खुशियाँ साझा करने का यादगार अवसर प्रदान किया। भारत की माननीय राष्ट्रपति के साथ हुई यह भेंट युवा विद्यार्थियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रही। इस संवाद ने विद्यार्थियों को न केवल प्रेरित किया, बल्कि यह पल उनके लिए जीवनभर याद रहने वाला बन गया।

विचारणीय विचार

"जब हम सोचते हैं कि हम जानते हैं, तब हम सीखना बंद कर देते हैं।"

~डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अगस्त 2026 की गतिविधियां

हर घर तिरंगा: केन्द्रीय विद्यालयों में गूंजा राष्ट्रप्रेम का जयघोष

नई दिल्ली: देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों ने 9 से 17 अगस्त 2026 तक आयोजित 'हर घर तिरंगा' अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए विद्यालय परिसरों को देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम की भावना से सराबोर कर दिया। अभियान के दौरान विद्यार्थियों और शिक्षकों ने विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता कर राष्ट्र के प्रति अपने सम्मान और गौरव की अभिव्यक्ति की।

इस अवसर पर विद्यालयों में तिरंगा रैलियों, पोस्टर निर्माण, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं और ध्वजारोहण समारोहों का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने harghartiranga.com पोर्टल पर 'तिरंगे के साथ सेल्फी' अपलोड कर राष्ट्रव्यापी अभियान में अपनी सहभागिता दर्ज कराई और 'वंदे मातरम्' का गायन किया।

एक सप्ताह तक चले इस आयोजन के दौरान देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनके साहस, बलिदान और दृढ़ संकल्प को स्मरण करते हुए विद्यार्थियों को स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों से परिचित कराया गया।

के.वि.सं. का विस्तार 79 नए विद्यालयों के साथ नेटवर्क पहुँचा 1,367

नई दिल्ली: केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने वर्ष 2026–27 के दौरान देश के विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 79 नए केन्द्रीय विद्यालय खोलकर अपने राष्ट्रव्यापी नेटवर्क का विस्तार किया है। इसके साथ ही के.वि.सं. के विद्यालयों की कुल संख्या बढ़कर 1,367 हो गई है।

नये खुले केन्द्रीय विद्यालयों के नाम:

- के.वि. मुलुगु, तेलंगाना
- के.वि. संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश
- के.वि. पिल्लैयारपट्टी, तमिलनाडु
- के.वि. निमी शेखोपुर सराय, जिला शेखपुरा, बिहार
- के.वि. बोधगया, बिहार

यह विस्तार भारत सरकार द्वारा वर्ष 2024 में 85 नए केन्द्रीय विद्यालयों और वर्ष 2025 में 57 केन्द्रीय विद्यालयों को दी गई पूर्व स्वीकृतियों के बाद हुआ है। यह देशभर में के.वि.सं. के नेटवर्क के निरंतर विस्तार और गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने के प्रयासों को दर्शाता है।

के.वि.सं. मुख्यालय को मिला राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-2026

नई दिल्ली: राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट एवं व्यापक प्रयोग हेतु केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय) का चयन राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-2026 (द्वितीय स्थान) के लिए किया गया है। यह सम्मान हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर 2026 को प्रदान किया जाएगा।

खेलेगा भारत, जीतेगा भारत: के.वि.सं. में मनाया गया खेल और फिटनेस का उत्सव

महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया जाता है। इसी क्रम में 28 से 30 अगस्त 2026 तक "खेलेगा भारत, जीतेगा भारत" थीम के तहत तीन दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान के माध्यम से राष्ट्रीय खेल दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया।

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रव्यापी अभियान का मुख्य उद्देश्य बच्चों और युवाओं में खेलों के प्रति रुचि विकसित करना, नियमित शारीरिक गतिविधियों के महत्व के प्रति जागरूक करना तथा स्वस्थ एवं सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा देना था। अभियान के दौरान देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं और फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया। फुटबॉल, हॉकी, क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, बैडमिंटन और एथलेटिक्स जैसी खेल गतिविधियों के साथ-साथ रस्सीकूद, योग, व्यायाम और सामूहिक फिटनेस अभ्यास भी कराए गए।

इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, अनुशासन और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने पर जोर दिया गया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ नियमित रूप से खेलों और शारीरिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय देने के लिए प्रेरित किया। 'एक घंटा खेल के मैदान में' गतिविधि इस अभियान का प्रमुख आकर्षण रही। इसके तहत विद्यार्थियों ने मैदान में एक घंटे तक विभिन्न खेलों एवं शारीरिक गतिविधियों में भाग लिया।

इसके साथ ही 'डे ऑन साइकिल' और 'रन एंड राइड' जैसी गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। 'डे ऑन साइकिल' के माध्यम से विद्यार्थियों को साइकिल चलाने के स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय लाभों के प्रति जागरूक किया गया। विद्यार्थियों ने साइकिल रैलियों में भाग लेकर नियमित साइकिलिंग को जीवनशैली का हिस्सा बनाने का संदेश दिया। वहीं, 'रन एंड राइड' गतिविधि के अंतर्गत दौड़ और साइकिलिंग के माध्यम से फिटनेस के प्रति जागरूकता बढ़ाई गई। इन विविध गतिविधियों ने विद्यार्थियों में खेलों के प्रति उत्साह और सहभागिता की भावना को मजबूत किया। साथ ही, उन्हें सक्रिय रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, प्रदूषण कम करने तथा पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने के लिए भी प्रेरित किया।

उभरते सितारे

के.वि.सं. की पूर्व छात्रा ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रचा इतिहास

केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, इंफाल की पूर्व विद्यार्थी अरिहा पंगामबाम (बैच 2023) ने शानदार उपलब्धि हासिल करते हुए इतिहास रच दिया। उन्होंने एशियन एरोबिक जिम्नास्टिक्स चैंपियनशिप की सीनियर महिला व्यक्तिगत एरोबिक जिम्नास्टिक्स स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनकर देश और के.वि.सं. का गौरव बढ़ाया। फिलीपींस के टागायटे सिटी में 4 से 7 अगस्त 2026 तक आयोजित इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में अरिहा ने दमदार प्रदर्शन करते हुए 19.100 अंक अर्जित किए और स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

अस्मी ने राष्ट्रीय ट्रायथलॉन चैंपियनशिप में जीता कांस्य

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, नीमच की प्रतिभाशाली छात्रा अस्मी कटारिया ने पुणे में आयोजित आईटीएफ राष्ट्रीय ट्रायथलॉन चैंपियनशिप 2026 के सब-जूनियर महिला वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। कठिन प्रतिस्पर्धा के बीच अस्मी ने अपनी उत्कृष्ट खेल प्रतिभा, दृढ़ संकल्प और अदम्य सहनशक्ति का परिचय देते हुए यह महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की। अपने शानदार प्रदर्शन से उन्होंने न केवल के.वि.सं. का गौरव बढ़ाया, बल्कि अपने अदम्य साहस से नीमच का भी नाम रोशन किया।

नन्हीं उम्र, बड़ा कमाल गिनीज रिकॉर्ड प्रयास में लिया हिस्सा

केन्द्रीय विद्यालय कडुथुरुथी की कक्षा 4 की छात्रा अंबल विजया किशोर ने 16 अगस्त 2026 को तमिलनाडु के चेन्नई में आयोजित ऐतिहासिक गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स प्रयास में भाग लेकर अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास का शानदार प्रदर्शन किया। सैकड़ों मार्शल आर्ट प्रतिभागियों के साथ अंबल ने समन्वित कराटे चॉप रूटीन प्रस्तुत की। यह प्रयास "एक साथ कराटे चॉप रूटीन करने वाले सर्वाधिक लोगों" का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इतनी कम उम्र में अंबल की यह उपलब्धि उनके उत्कृष्ट मार्शल आर्ट, कौशल, अनुशासन और आत्मविश्वास को दर्शाती है।

संरक्षक: विकास गुप्ता, *आईएएस*, आयुक्त, के.वि.सं.
प्रधान संपादक: चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शै.)
संपादक मंडल: सोमित श्रीवास्तव संयुक्त आयुक्त (शै.), रत्ना पाठक, सहायक शिक्षा अधिकारी, सचिन राठौर, सहायक संपादक
सहभागी: समस्त केन्द्रीय विद्यालय
संपादकीय सलाहकार सुरभि गोयल, कंटेंट राइटर, अमन, कंटेंट राइटर, संजना जांगड़ा, ग्राफिक डिजाइनर
सभी संभाग अपनी टिप्पणी और विशेष स्टोरी निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं: kvschronicle@gmail.com
© केन्द्रीय विद्यालय संगठन
यह ई-प्रकाशन केवल आंतरिक वितरण हेतु के.वि.सं. (मु.) द्वारा प्रकाशित।